प्रवचन

१. साधना का सार-तत्व-समता

मध्याह्न का समय था। चिलचिलाती धूप चारों ओर फैली हुई थी। जमीन आग उगल रही थी। गर्म-गर्म हवा चल रही थी। एक श्रेष्ठी के द्वार पर एक भिक्षुक जाकर खड़ा हुआ। भिक्षुक की श्याम वेशभूषा को देखकर श्रेष्ठी विस्मय-विमुग्ध मुद्रा में बोला—आपने ये श्याम वस्त्र क्यों धारण किये हैं? श्याम वस्त्र शोक के प्रतीक होते हैं इसी-लिए राजस्थान के किन्हीं-किन्हीं प्रान्तों में विधवा बहनें ये वस्त्र धारण करती हैं। क्या आपका भी कोई स्नेही मर गया है? जिस कारण आपने यह अनोखी वेशभूषा धारण की है।

संन्यासी ने मधुर मुस्कान बिखेरते हुए कहा—श्रेष्ठी प्रवर! मेरे अत्यन्त स्नेही मित्रों की मृत्यु हो गयी है, जिनके साथ मैं दीर्घकाल तक रहा।

श्रेष्ठी ने साश्चर्य पूछा—आपके किन मित्रों की मृत्यु हो गयी? आप तो सन्त हैं। सन्त के तो संसार के सभी प्राणी मित्र होते हैं। वे विशेष मित्र कौन थे आपके?

संन्यासी ने गम्भीर मुद्रा में कहा—मेरे चिर साथी थे—क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष। जिनके साथ मैं अनन्त काल तक रहा। प्रत्येक जीवयोनि में वे मित्र मेरे साथ रहे। पर अब उनकी मृत्यु हो जाने से मैंने ये श्याम वस्त्र धारण किये हैं। ये श्याम वस्त्र उनके वियोग के प्रतीक हैं।

सेठ ने सुना, उसे आश्चर्य हुआ कि संन्यासी अपनी प्रशंसा कर रहा है। यह अतिशयोक्तिपूर्ण बात है। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ की मृत्यु होना कभी सम्भव नहीं। जब तक परीक्षण प्रस्तर पर इसे कसा न जाये, तब तक कैसे पता लग सकता है कि काम, क्रोध, मद, मोह की मृत्यु हो गई है।

श्रेष्ठी ने क्रोध की मुद्रा बनाते हुए कहा—अरे भिखमंगे! तू इस समय कहाँ से चला आया? हट्टे-कट्टे हो तो भी तुम्हें भीख माँगते हुए शर्म नहीं आती? चले जाओ यहाँ से।

सेठ की फटकार को सुनकर संन्यासी ने शान्त-मुद्रा में देहरी से बाहर कदम बढ़ाया कि श्रेष्ठी ने पुनः आवाज दी। बाबा कहाँ जाते हो? आओ बैठो, कुछ बात करेंगे। संन्यासी प्रसन्न मुद्रा में लौट आया और ज्यों ही लौटकर वह आया त्यों ही सेठ ने कहा—निर्लज्ज! शर्म नहीं आती तुझे? पुनः चला आया, चला जा यहाँ से। संन्यासी पुनः उलटे पैरों लौट गया। दो कदम आगे बढ़ा ही था कि पुनः सेठ ने आवाज दी। अरे! बिना भिक्षा लिये कहाँ जा रहा है? आ, भिक्षा लेकर के जाना। संन्यासी पुनः चला आया। सेठ ने अपने नौकर को आवाज दी। यह भिखमंगा मान नहीं रहा है। सुबह से ही इसने मेरा मूड बिगाड़ दिया। आओ, धक्का देकर इसे मकान के बाहर निकाल दो। सेठ की आवाज सुनते ही नौकर आया और संन्यासी को धक्का देकर और घसीट का बाहर निकाला। संन्यासी गिरते-गिरते बचा।

श्रेष्ठी ने संन्यासी के चेहरे को देखा वही प्रसन्नता, वही मधुर मुस्कान उसकी मुखमुद्रा पर अठखेलियाँ कर रही है। श्रेष्ठी अपने स्थान से उठा और संन्यासी के चरणों में गिर पड़ा।

उसने निवेदन किया—मेरे अपराध को क्षमा करें। मैंने परीक्षा के लिए आपका अनेक बार अप-मान किया। कठोर शब्दों में प्रताड़ना दी, पर आप बिना किसी प्रतिक्रिया के घर में आये और बिना किसी प्रतिक्रिया के लौट गये। आपके चेहरे पर एक क्षण भी क्रोध की रेखा उभरी नहीं और न मान का सर्प ही फुफकारें मारने लगा। आपने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो बात कही कि मेरे मित्र मर गये हैं। बिल्कुल सही है। धन्य हैं आपकी सहिष्णुता को, क्षमा को। आप परीक्षा की कसौटी पर खरे उतरे हैं।

संन्यासी ने मुस्कराते हुए कहा—सेठ! आप निरर्थक प्रशंसा के पुल बाँध रहे हैं। मैंने कोई बड़ी बात नहीं की है। यह बात तो एक कुत्ता भी करता है। उसे घर से निकालो, वह निकल जायेगा और तू-तू कर उसे बुलाओ तो वह पुनः चला आयेगा। मैं कुत्ते से तो गया गुजरा नहीं हूँ। आपने निकल जाने के लिए कहा, मैं चला गया और आपने पुनः बुलाया तो आ गया।

प्रस्तुत प्रसंग हमें चिन्तन करने के लिए उत्प्रेरित करता है कि क्षमा की बात करना सरल है, पर समय पर यदि कोई हमारा तिरस्कार करता है उस समय क्रोध न आये यह सबसे बड़ी बात है। क्रोध और मान दोनों सहचर हैं। जरा सा अपमान होने पर इन्सान अपने आप पर नियन्त्रण नहीं रख सकता। उसका अहंकार गरज उठता है कि मैं कौन हूँ? क्या तुम मुझे नहीं जानते? मैं तुम्हें ऐसा छठी का दूध पिलाऊँगा कि तुम जीवन भर याद करोगे।

जैनधर्म ने धर्म के दस प्रकार बताये हैं। ठाणांग सूत्र के दसवें स्थान में उन दस धर्मों का उल्लेख हुआ है। द्वादश अनुप्रेक्षा में आचार्य कुन्दकुन्द ने भी उन दस धर्मों का वर्णन किया है। आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थ सूत्र में, आचार्य वट्टकेर ने मूलाचार में, नेमिचन्द्र सूरि ने प्रवचनसारोद्धार में, जिनदासगणि महत्तर ने आवश्यकचूर्णि में उन दस धर्मों का उल्लेख किया है। कुछ क्रम भेद रहा है वर्णन करने में, पर सभी में एक स्वर से क्षमा को प्रथम धर्म माना है।

क्षमा धर्म का प्रवेश द्वार है। किसी व्यक्ति को किसी मकान में प्रवेश करना है तो मुख्य द्वार से प्रवेश करता है। वैसे ही क्षमा धर्म का प्रवेश द्वार है बिना क्षमा के धर्म में प्रवेश नहीं होता। क्षमा करना कायरों का काम नहीं, जो वीर होते हैं वे ही क्षमा कर सकते हैं।

जैन साहित्य में वर्णन है कि अढ़ाई द्वीप के बाहर एक अष्टापद नाम का पक्षी होता है। अन्य पक्षियों की तरह वह जमीन पर या वृक्ष पर किसी घोंसले में बच्चा नहीं देता। अनन्त आकाश में उड़ान भरते समय ही भारण्ड पक्षी की मादा बच्चा देती है और वह बच्चा जब जमीन पर गिरता है तो चुम्बक की तरह जंगल में रहे हुए बारह हाथियों को अपनी ओर खींच लेता है और बारह हाथियों को लेकर आकाश में उड़ जाता है ऐसा वीर होता है वह अष्टापद पक्षी। जन्मते हुए बालक में जब इतनी अपार शक्ति होती है तो युवावस्था में उसमें कितनी शक्ति हो सकती है। यह हम सहज कल्पना कर सकते हैं। ऐसे वीर अष्टापद पक्षी यदि दस लाख एकत्रित किये जायँ उतनी शक्ति होती है बलदेव में और बीस लाख अष्टापद पक्षी की शक्ति होती है वासुदेव में और चालीस लाख अष्टापद पक्षी की शक्ति होती है एक चक्रवर्ती में। तीनों कालों के चक्रवर्तियों को मिलाने पर जितनी शक्ति होती है उतनी शक्ति एक देव में होती है और तीनों काल के देवों की शक्ति मिलाने पर जो शक्ति होती है उतनी शक्ति होती है एक इन्द्र में और तीनों कालों के इन्द्रों की शक्ति मिलाने पर उससे भी अधिक शक्ति तीर्थंकर अरिहंत की एक अंगुली में होती है। अरिहंत 'क्षमाशूर' होते हैं। इसलिए शास्त्रकार ने स्थानांग सूत्र में 'खंतिसूरा अरिहंता' कहा है। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान ने स्पष्ट उद्घोषणा की है कि जो मेधावी पण्डित हैं, वे क्षमा को धारण करते हैं। कुरानशरीफ में भी लिखाहै—जो गुस्सा पी जाते हैं और लोगों को माफ कर देते हैं, अल्लाताला ऐसी नेकी करने वालों को प्यार करते हैं।

मोहम्मद साहब ने अपनी तलवार की मूठ पर ये चार स्वर्ण वाक्य खुदवाये थे कि १. तेरे साथ यदि कोई अन्याय करे, तो तू उसे क्षमा कर दें। २. काटकर जो अलग कर देता है, उसके साथ मेल कर। ३. बुराई करने वाले के साथ भलाई कर, और ४. सदा सच्ची बात कह, तेरे खिलाफ भी क्यों न हो?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि दिनकर ने बहुत ही महत्वपूर्ण बात लिखी है—

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दंतहीन
विषहीन विनीत सरल हो।

जहाँ नहीं सामर्थ्य शोध की, क्षमा वहाँ निष्फल है। गरल घूँट पी जाने का विष है वाणी का छल है॥

जैन आगम साहित्य में ऐसे सैकड़ों प्रसंग हैं जो क्षमा के महत्व को उजागर करते हैं। गजसुकुमाल मुनि जो एकान्त शान्त स्थान पर ध्यानमुद्रा में खड़े थे। सोमिल ने उन्हें देखा और वह क्रोध से तिलमिला उठा। इस दुष्ट ने मेरी पुत्री के साथ विवाह करने का सोचा था पर यह साधु बन गया है। इसने मेरी पुत्री के साथ छल किया है। अब मैं इसे दिखाता हूँ इस छल का चमत्कार। क्रोध से अन्धे बनकर उसने गीली मिट्टी की सिर पर पाल बाँधी और उसमें खैर के अंगारे रख दिये। यदि गजसुकुमाल मुनि आँख उठाकर भी देख लेते तो वह वहीं पर जलकर भस्म हो जाता, पर उस क्षमा के देवता ने क्षमा का जो ज्वलन्त आदर्श उपस्थित किया वह किससे छिपा हुआ है? मेतार्य मुनि की कहानी, आर्य स्कन्दक मुनि का पावन प्रसंग सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है जब हम उन पावन प्रसंगों को पढ़ते हैं तब हमारा हृदय श्रद्धा से नत हो जाता है।

हमारे श्रद्धेय सद्गुरुणीजी श्री सोहनकुँवरजी महाराज क्षमा की साक्षात्मूर्ति थे। मैंने अनेकों बार देखा कि कैसा भी कटु से कटु प्रसंग आने पर भी उनका चेहरा गुलाब के फूल की तरह सदा खिला रहता था। कटु बात का भी मधुर शब्दों में उत्तर देती थीं। उनकी सहिष्णुता, नम्रता, सरलता का जब भी स्मरण आता है तब मेरा हृदय श्रद्धा से नत हो जाता है।

हमें जैनधर्म जैसा पवित्र धर्म मिला है इस धर्म का यही पावन सन्देश है कि हम कषाय को कम करें। कषाय भव भ्रमण का कारण है। संन्यासी की तरह हम भी अनन्त काल के उन मित्रों को, जो हमारे साथ अत्यन्त अविकसित अवस्था निगोद में भी रहे हैं और नरक में भी उन्होंने हमारा साथ नहीं छोड़ा, न देवलोक में ही, वे हमारे से बिछुड़े। मित्र बनकर रहे, पर उन्होंने सदा दुश्मनों का पार्ट अदा किया। लेकिन हम भूल से उन्हें मित्र मानते रहे।

एक बार मुल्ला नसीरुद्दीन मार्ग में बैठे हुए थे। एक व्यक्ति ने नसीरुद्दीन को पूछा कि अमुक गाँव कितना दूर है? नसीरुद्दीन ने कहा—नजदीक भी है और दूर भी है। उसने कहा—तुम तो पहेली बुझा रहे हो। नजदीक भी बता रहे हो और दूर भी। नसीरुद्दीन ने कहा—तुम जिस गाँव की बात कर रहे हो, वह गाँव तो पीछे छूट गया है यदि पीछे लौटोगे तो गाँव नजदीक है और आगे बढ़ोगे तो गाँव दूर होता चला जायेगा। हम भी यदि कषाय के क्षेत्र में पीछे हटेंगे तो मोक्ष दूर नहीं है और यदि आगे बढ़ते चले गये तो मोक्ष दूर होता चला जायेगा। इसलिए हम कषाय से पीछे हटेंगे तो मोक्ष प्राप्त हो जायेगा। यदि हम कषाय के क्षेत्र में आगे बढ़ते चले गये तो मोक्ष दूर होता चला जायेगा। आपको यह स्मरण होगा कि नमस्कार महामन्त्र के पाँच पद हैं। उन पदों का आचार्यों ने रंग बताया है। नमो अरिहंताणं का रंग श्वेत है। सिद्धाणं का रंग रक्त है। आचार्य का रंग पीत है। उपाध्याय का रंग नीला है और साधु का रंग श्याम है। रंगों की अपनी दुनिया है। श्वेत रंग पवित्रता का प्रतीक है, रक्त रंग अप्रमत्तता का द्योतक है। यह रंग अतीन्द्रियता की ओर ले जाता है। पीला रंग मन को सक्रिय बनाता है। नीला रंग शान्ति प्रदान करता है तथा श्याम रंग दृढ़ता का प्रतीक है। वह अवशोषक है। इसीलिए श्वेत वस्त्रधारी श्रमणों का रंग श्याम बताया है। क्योंकि वह कषाय के मित्रों को सदा के लिए मिटाने के लिए उद्यत रहता है और इसीलिए वह प्रबल पुरुषार्थ करता है। हम साधना के क्षेत्र में तभी आगे बढ़ेंगे जब कषाय नष्ट होगा। □

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org